प्रातः क्लास 16-1-68 ओमशान्ति पितश्री .. शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मरठे2 रूहानी बच्चों यह तो समझते हो कि हमदेवतायें बन रहे हैं। स्टुडन्ट जो पढ़ते हैं उन्हों की बुधि में जरूर रहता है हम फलाना बनने लिये पढ़ते हैं। पहले2 टीचर की जरूर याद आवेंगी। तुम बच्चे भी टीचर को तो जरूर याद करते होंगे जिन द्वारा तुम देवता बनते हो। उठते-बैठते चलतेस्टुडन्ट को टीचर जरूर याद रहती है। यह है तुम्हारा अनुभव। तुम बच्चे यहां अनुभव सुनाते हो ना कि हम घर में जाते हैं वा सेन्टर पर जाते हैं हमको यह जरूर बुधि में रहता है कि हम देवता बन रहे हैं। हम स्टुडन्ट बेहद के टीचर द्वारा पढ़ रहे हैं। टीचर भी याद है और उद्देश्य भी याद है। हम देवता बनने वाले हैं। कौन सा देवता? सो तो सिवाय इन ल0ना0 के चित्र के और कुछ भी तुमको याद नहीं आवेगा। और तो कोई ऐसा सुन्दर चित्र है नहीं। पढ़ाने वाला शिव बाबा भी याद रहते हैं। क्या पढ़ाते हैं वह भी याद है। क्योंकि यह पढ़ाई है। यह (ल0ना0) चित्र तो है नई दुनिया के। यह कोई इस दुनिया के नहीं हैं। इन देवताओं के आगे खुद मनुष्य जाकर माथा टेकते हैं कि यह देवतायें थे। एमआबजेक्ट का यह एक ही चित्र है। ल0ना0 या विष्णु। यह तो जरूर याद होगा हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। यह महाराजामहारानी का चित्र है। और कोई चित्र नहीं। जिस में एमआबजेक्ट हो। और किसको चित्र है? सिवाय इन ल0ना0 के। तो तुम बच्चों की बुधि में यह जरूर रहना चाहिए बाबा हमको पढ़ाते हैं देवता बनाने लिये। सारा भारत तो क्या सारी दुनिया में और कोई चित्र है नहीं। राम-सीता को भी वास्तव में तुमस्वर्ग के देवता नहीं कहेंगे। तुम्हारी एमआबजेक्ट ही यह है, चित्र भी यह एक ही है जो तुम्हारे लिये रखा हुआ है। यह तो जरूर तुम्हारी बुधि में रहना चाहिए। कौन सा देवी-देवता बनेंगे। चित्र तो जरूर चाहिए ना। यह चित्र है तुम्हारे आगे। और कोई एमआबजेक्ट का चित्र है नहीं। बाप और यह वरसा। शिव बाबा के बाद दूसरा है यह (ल0ना0)। वह पढ़ाने वाला, और यह पढ़ाई की रिजल्ट। यह भी तो बहुत सहज हो गया है। शिव बाबा को और वरसे को याद करना है। यह भी मन्मनाभव हो गया ना। देह के सभी धर्म त्याग एक बाप को याद करना है। और मद्याजीभव। इसमें कोई डिफीकल्ट नहीं है। बाबा हमको नर से ना0 बनाते हैं। यह देवतायें हैं ना। और कोई प्रजा आदि का भी चित्र है नहीं। ल0ना0 की डिनायस्टी है। जिसमें आठ जन्म लेते हैं। तो तुम कहेंगे हम इनके ही सूर्यवंशी वंशावली में आवेंगे। अपने घर में हो वा कहां भी हो अपन को सदैव स्टुडन्ट समझो। बाबा हमारा टीचर है। एमआबजेक्ट सदैव बुधि में रखनी है। और साथ देवीगुण भी धारणकरनी है। तुम जानते हो आधा कल्प हम भक्ति मार्ग में हम इन्हों के देवी स्वभाव का वर्णन करते आये हैं। आसुरी स्वभाव और देवीस्वभाव का कान्ट्रास्ट भी अभी तुम जानते हो। आगे कहते थे हम नीच पापी हैं। अभी तो समझते हो हमको फिर ऐसा बनना है। ऊंच ते ऊंच पढ़ाने वाला बाप मिला है। ऊंच ते ऊंच पद मिलता है। इन से ऊंचा और कोई पद मिल नहीं सकता। भगवानुवाच भगवान खुद बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को भगवान समझ याद नहीं करना है। पहले भगवान को याद करना है फिरकृष्ण को। शिव बाबा यह कृष्ण बनाते हैं। कृष्ण छोटेपन में प्रिन्स है ना। ल0ना0 ही छोटेपन में राधे-कृष्ण थे। बच्चे जानते हैं यह वर्ल्ड-प्रिन्स था। सो अभी बेगर है। भारत डबल सिरताज था। अभी तो भारत कंगाल है। कृष्ण को राजाई नहीं कहा जाता। ल0ना0 की राजाई कहेंगे। अभी इस सारी पढ़ाई का मूल तत्त्व क्या है शिव बाबा को याद करना है। पढ़ाने वाला टीचर तो जरूर याद रहेगा ना। बच्चों को मालूम है यह हमारा बाप भी है टीचर भी है, गुरु भी है अर्थात बेड़ा पार करने वाला है। एमआबजेक्ट तो जरूर चाहिए ना। मनुष्य गुरु करते हैं उनसे कोई पूछे हमको क्या मिलेगा? सन्यासी लोग कब बता न सकेंगे। वह तो यह राजयोग सीखते ही नहीं न सिखला सकते हैं। निराकार बाप ही निराकारी बच्चों को अर्थात आत्माओं को बैठ समझाते हैं। वह बाप तो एक ही है। तो बच्चों को बुधि में बाप को भी याद करना है और देवीगुण भी धारण करनी है। हमारा बाबा ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। उनकी महिमा ही अलग है। देवताओं की महिमा अलग है। शिव के चित्र में भी उनकी महिमा लिखी हुई है।--

और कृष्ण के चित्र में भी महिमा लिखी हुई है। शिव बाबा है पढ़ाने वाला। और वह है जो भविष्य का पद मिलना है। भल बच्चे जानते हैं फिर भी निरन्तर याद जरूर करना है। क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के पाप इस याद की यात्रा से ही कटनी है। तुम यह समझते हो। फिर कोई माने न माने। किसको जोरी फांसी नहीं चढ़ाया जाता है। नहीं मानते हो तुम्हारी मर्जी। यह तो तुम बच्चे समझते हो, बुधि में आना चाहिए धक्का खा खाकर फिर भी आवेंगे तो यहां ही। जावेंगे कहां। यह बेहद के मां बाप हैं। इनके पास आना ही है। भल कईयों की बुधि भटकती है धारणा नहीं हो सकती है। हरेक को अपने में देखना है मैं क्या पुरुषार्थ करता हूं। हमारे में क्या2 खामियां हैं। देवी चाल है? यह देवतायें तो प्याज आदि नहीं खाते। इन पर तो फल-फूल ही भोग चढ़ाते हैं। यह सिगरेट आदि भी नहीं पीते। तुम्हारे में कोई है जो कब कब सिगरेट आदि पीते हैं? अपने से पूछना चाहिए हमारी कोई आसुरी चलन है तो नहीं है। देवताओं के तो सदैव गुण गाये जाते हैं। 63 जन्म नहीं गाया है। 50 जन्म कहेंगे। क्योंकि पहले तो सिर्फ एक शिव बाबा के ही गुण गाते हैं। अव्यभिचारी भक्ति होती है। फिर देवताओं की भक्ति शुरू करते हो। तो अपने दिल से पूछना चाहिए। ऐसी कोई अशुध चीज न खानी चाहिए। पान में भी तम्बाकु न होना चाहिए। खुशबूदार जैसी चीजें हों। बाबा को मालूम है कलगाचारियों पास पान मिलते हैं। बड़े ही फर्स्ट क्लास खुशबूदार मसाले वाले होते हैं। लक्ष्मी के मंदिर में भी पान बहुत खुशबूदार चीजों का बना हुआ देते हैं। उसमें खुशबू बहुत ही अच्छी होती हैं। उनका कोई हर्जा नहीं है। यह कोई खराब चीजें नहीं हैं। यह तो बिल्कुल साधारण बात है। यहां कई नये2 भी आते हैं, सिगरेट अथवा शराब आदि पीया हुआ होता है तो उनकी झट बास आदि आ जाती है। कोई2 बड़े आदमी कहते हैं तो अलग किया जाता है। समझो कोई बड़ा आदमी है पूछता है हम क्लास में आवें? उनको ऐसे थोड़ेही कहेंगे नहीं आओ। वह अच्छा फील नहीं करेगा। तो कोई नये2 भी आते हैं बीड़ी वाले तो बास रहती है। तो अपनी जांच करनी है हम ऐसी कोई अशुध चीज अथवा तमोगुणी चीज तो नहीं खाते हैं। भुली को भी उगराई बड़ी चीज2 आती है। तो ऐसी2 खटाई आदि की तमोगुणी चीज नहीं खानी चाहिए। देवताओं को शुध चीजों का ही भोग लगाया जाता है। तुम जानते हो हम श्रीनाथ द्वारे में बड़ी शुध और पक्की रसोई बनाते हैं। और फिर जगतनाथ पुरी में जाओ तो वहां सिर्फ चावल ही बनते हैं। श्रीनाथ में चावल नहीं बनाते हैं। वह फिर कच्ची रसोई हो जाती है ऐसे नहीं कि सतयुग में चावल नहीं होंगे। सभी कुछ होगा। क्या2 वहां होता है सो आगे चलकर देखेंगे। जितना2 नजदीक आते जावेंगे तो फिर सभी कुछ मालूम पड़ता जावेगा। बाबा कहते हैं बच्चे थोड़ा आगे बढ़ो तो बहुत साक्षात्कार होंगे। अभी तुमको साक्षात्कार होते रहते हैं ना। हम देवता बनते हैं। और कोई ऐसे बता न सकेंगे कि यह तुम्हारी एम आबजेक्ट है। यह बनने की कौन सी पढ़ाई होती है यह भी कोई नहीं जानते हैं। गीता में भल है परन्तु समझते थोड़ेही हैं। यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं। अभी तुम अच्छी रीत समझते हो। तुम बच्चे जब बैठते हो तो यह बुधि में रहना है हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। हमारे में कौन सी अवगुण है/उसको निकालना है। जो हम बाप को याद नहीं करते हैं यह है पहला2 अवगुण। याद नहीं करेंगे तो हमारे पाप भी नहीं कटेंगे। मुख्य है ही याद की यात्रा। जिसमें ही माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। तूफान आते हैं। बाप कहते हैं भूलना नहीं है। हम स्टुडन्ट हैं। हम पढ़ाई पढ़ने जाते हैं यह पद पाने लिये। तुम्हारा यह एम आबजेक्ट बुधि में खड़ा है। आगे यह कुछ भी नहीं जानते थे। अभी समझते हो बाबा हमारा टीचर भी है। हां बाप समझाते थे। हम सभी ब्रदर्स हैं। वह हमारा बाप है। बाकी हम सभी को वह सद्गति देते हैं यह भी नहीं समझते थे। भगवान पतित है, परमपिता है। जब कि उनको परमपिता कहते हो तो निराकार समझकर नहीं कहते हैं। बाप के तो बच्चे जरूर होंगे ना। तुम जानते हो वह परमात्मा है। हम सभी आत्मायें हैं। जो अच्छे2 बच्चे हैं उन्हीं को बुधि में तो यह जरूर आता होगा मुख से कहते भी हैं हम सभी भाई2 हैं। क्रिश्चन हिन्दु भाई2, परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। मुख से जो कुछ कहते हैं उनका अर्थ नहीं समझते। हम भाई2 हैं तो हमारा बाप भी जरूर चाहिए।

ऐसे बाप को फिर पत्थर-भित्तर में डाल दिया है तो बच्चों का क्या हाल होगा। बाप को पत्थर भित्तर में ठोक देने सेखुद भीपत्थर बुधि बन गये हैं। यह दुर्गति हो जाती है। जो बाप ही आकर समझाते हैं। बाप को ही पार्ट मिला हुआ है बच्चों को पढ़ाने का। यह बातें कोई भी नहीं जानते हैं। घड़ी2 भूल जाते हैं। यहां जब बच्चे आते हैं तो उन्हों को रिफ्रेश किया जाता है। नशा चढ़ता है फिर घर में जाने सेनम्बरवार नशा उतरता जाता है। फिर बहुत विकर्म कर देते हैं। बहुत हैं जो बाप को सच्च बताते ही नहीं। बहुत अच्छे2 फर्स्ट क्लास बच्चे भी बाप को सच्ची दिल की बात नहीं सुनाते। गरीब साधारण बच्चे झट अपने दिल ही हाल बता देते हैं। महारथी बड़ा अहंकार में रहते हैं। अपने को होशियार समझते हैं तो वह इज्जत का अहंकार रहता है। अपनीजीवनकहानी लिखने से किवाते(दिल सिकस्त) हैं। पता नहीं कोई को दिखला देवे। यह अहंकार हुई ना। यह तो सभी जानते हैंअजामिल जैसे पापात्माएं हैं। पूरे बन्दर भी हम थे। यह भी तुम्हारे साथ पूरा अजामिल, पूरा सूरदास था। ज्ञान का नेत्र था नहीं। अंधे के औलाद अंधे पाया हुआ है ना। क्योंकि ज्ञान का नेत्र है नहीं। आत्मा ही ज्ञानी और अज्ञानी बनती है। बाप तो है ज्ञान का सागर। वही आकर आत्माओं को ज्ञानी बनाते हैं। अभी ज्ञान और अज्ञान में कितना फर्क है। ज्ञ अज्ञान को कहेंगे तमोप्रधान, ज्ञानी को कहेंगे सतोप्रधान। तमोप्रधान अज्ञानी को अपार दुःख सतोप्रधान ज्ञानी को अपार सुख होते हैं। यह फर्क भी अभी तुम समझते हो। अच्छे2 बच्चों के दिल पर रहता है। जो अपने बनने न हैं उनके लक्षण सुधरते ही नहीं। धारणा होती ही नहीं। मिसाल भी देते हैं सरकंडल के साथ से ... सभी देहअंहकारी सान्डे हैं। सान्डे में अपना अहंकार बहुत होता है। बड़े2 महारथी भी बड़े देहअंहकारी ढब से बात करते हैं। अपने को बहुतही होशियार समझते हैं। बापदादा के आगे भी अपना वह सान्डापना ही दिखाते रहेंगे। अहंकार तो रहता है ना अपना। यहां तो बहुत मीठा बनना है। स्वभाव को बदलना है। मुख से सदैव रत्न निकले। देहीअभिमानी है तो रत्न निकलते हैं। देहअभिमानी से जरूर पत्थर ही निकलेंगे। इसलिये ड्रामा के प्लैन अनुसार स्थापना में समय लगता है। जबसान्डापना निकल जाये तब यह अवस्था हो। टाईम लगता है। पहले नम्बर में है देहअभिमान। देहअभिमान में आने से ही फिर और विकार लगते हैं। बड़ा दुश्मन है देहअभिमान। काम विकार का तूफान भी देहअहंकार के कारण आता है। देहीअभिमानी बने तो काम के तूफान भी नहीं आवेंगे। इस लिये बाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझो। आत्मअभिमानी बनो। आत्म-अभिमानी बनने लिये बाप बार2 समझाते हैं बाबा सभी आत्माओं को मुक्तिधाम ले जावेंगे। जाना तो सभी को है। सभी का हिसाब किताब चुकुत होना है। जब तक हिसाब किताब चुकुत न हुआ है तब तक दुःख अशान्ति है। मुख्य बात है बाप को याद करना। रोज2 कितना समझाया जाता है फिर भी सान्डेपना देहअभिमान बड़ा मुश्किल टूटता है। यही बड़ा रोग है। मुश्किल आत्म-अभिमानी बनते हैं। देहअभिमान छोड़ना बड़ा मुश्किल समझते हैं। देही अभिमानी बने तब काम पर जीत पा सकें। बन्दर के आगे भल हाथी आवे, कोई बन्दूक ले जाये सामने खड़ा रहे तो भी गुर्र2 जरूर करेंगे। यहां भी बच्चों में देहअभिमान इतना है जो शिव बाबा के आगे भी गुर्र2 करते हैं। इसलिये बन्दर और मनुष्य की सिकल भी एक जैसी बनाते हैं। अभी तुम समझते हो हम बराबर बन्दर थे। बल्कि बदतर थे। मनुष्यहोकर और बन्दर से भी बदतर बन जाते हैं। फिर बाप आकर मंदिर लायक देवता बनाते हैं। कमाल है ना। इसलिये बाप को जादूगर भी कहते हैं। बन्दर बुधि को विश्व का मालिक बनाये देते हैं कमाल है ना। तुम जानते हो हम कितने पाप आदि किये हैं। अभी फिर ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप आकर हमको सभी दुःखों से छुड़ाते हैं। कांटों को फूल, जंगल को मंगल बनाते हैं। यह सारी दुनिया बेहद का जंगल है। फिर बेहद का मंगल कर देते हैं। तुम सारी दुनिया पर राज्य करते हो। तुम विश्व के मालिक बनते हो ना। अच्छा बाप कहते हैं जो मैं क्या सुनाऊं। मन्मनाभव सभी को यही बताते रहो कि बेहद के बाप को याद करो। बाप स्वर्ग की बादशाही देते हैं। बाप को याद करो तो स्वर्ग तुम्हारा है। मिलिट्री वालों को भी बाबा समझाते हैं तुम्हें हिंसा तो करनी ही है। परन्तु स्वर्ग में जाने चाहते हो तो शिव बाबा को याद करो। कितने सिपाही तैयार होते हैं क्योंकि उनको कहा जाता है युध के मैदान में मरने से स्वर्ग में जावेंगे। बच्चों को समझाया बहुत जाता है। परन्तु यहां का यहां ही भूल जाते हैं। अच्छा ओम।